जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 47 संख्याः 259 प्रभात कोटा, शनिवार 2 जुलाई, 2022 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 8 मूल्य 1.20 रु.

टोक्यो ओलंपिक के गोल्ड मैंडलिस्ट नीरज चोपड़ा ने स्टॉकहोम में खेले गये डायमण्ड लीग में अपने प्रदर्शन से इतिहास रच दिया है। उन्होंने इस गेम में 89.94 मीटर का जैवलिन थ्रो किया और मात्र 6 सैंटीमीटर के फासले से 90 मीटर का मार्क हासिल करने से चूक गये। तथापि, उन्होंने एक ही महीने में दूसरी बार नैशनल रिकॉर्ड तोड़ा है। डायमण्ड लीग गेम में ओलंपिक चैम्पियन नीरज चोपड़ा वर्ल्ड चैम्पियन एंडरसन पीटर्स के बाद दूसरे स्थान पर रहे और उन्होंने सिल्वर मैंडल हासिल किया है। उनके प्रतिद्वंदी एंडरसन पीटर्स ने जैवलिन थ्रो में 90 मीटर का मार्क हासिल किया और टूर्नामैंट के गोल्ड मैंडलिस्ट बने। इससे पहले नीरज चोपड़ा ने गत 14 जून 2022 को पावो नूरमी गेम्स (फिनलैण्ड) में 89.30 मीटर के साथ अपना ही नैशनल रिकॉर्ड तोड़ा था। नीरज चोपड़ा भले ही 90 मीटर थ्रो करने से चूक गए हों, लेकिन राष्ट्रीय रिकॉर्ड के अलावा वे स्टॉकहोम के नतीजे से प्रसन्न होंगे, क्योंकि यह पहली बार है, जब वे इस प्रतिष्ठित डायमण्ड लीग प्रतियोगिता में शीर्ष-3 में रहने में सफल रहे। 90 मीटर का मार्क चूक जाने के बाद नीरज चोपड़ा ने कहा, "अब मेरा अगला टारगैट 90 मीटर का मार्क हासिल करना है, मैं इसके बेहद करीब हूं और इसी साल मैं इस टारगैट को हासिल कर लूंगा।"

"रियल" शिव सेना कौन है: यह संघर्ष अब सैन्टर स्टेज पर रहेगा!

शिन्दे ने एम.एन.एस. के अध्यक्ष राज ठाकरे को नयी सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में जॉइन करने का ऑफर दिया है

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो

नई दिल्ली, 1 जुलाई। वर्ष 1966 में शिवसेना की स्थापना करने वाले बाला साहेब ठाकरे की विरासत किसके पास जाएगी?

क्या बाला साहेब के पुत्र के विरूद्ध विद्रोह का सफल नेतृत्व करने वाले महाराष्ट्र के नए मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे इसे संभालेंगे ? या फिर जिन्हें बाला साहेब ने अपना उत्तराधिकारी चुना था, यानी कि पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ? इन दोनों में से कौन-इस पार्टी की विरासत संभालेगा?

इन प्रश्नों के उत्तर आज सहज उपलब्ध नहीं है, लेकिन-दोनों पक्षों के दावों और प्रतिदावों का अंतिम परिणाम महाराष्ट्र की राजनीति के भविष्य का मार्ग तय करेगा।

यद्यपि, विद्रोही शिंदे गुट और पूर्व मुख्यमंत्री ठाकरे के नेतृत्व वाली अधिकारिक शिवसेना के दावों और प्रतिदावों का की सच्चाई चुनाव आयोग और अदालत को तय करनी है, फिर भी दोनों प्रतिद्वंद्वी पक्षों ने स्थिति अपने-अपने पक्ष में करने के लिए गतिविधियां शुरू कर दी हैं।

- **जानकार सूत्रों का कहना है कि, प्र.मंत्री मोदी व गृह मंत्री अमित शाह ने वादा किया है कि, वे हर संभव प्रयास करेंगे कि, शिन्दे को ही शिव सेना का सिंहासन मिले।**
- **हालांकि, शिन्दे को शिव सेना विधायकों का लगभग पूर्ण समर्थन मिला है, परन्तु फिर भी यह इतना आसान नहीं है, क्योंकि उद्धव ठाकरे का केस भी काफी मजबूत है, क्योंकि उद्धव ठाकरे का शिव सेना के संगठन पर पूरा कब्जा है।**
- **चार महीने बाद बी.एम.सी. के चुनाव होंगे तथा भाजपा बी.एम.सी. को शिव सेना के कब्जे से मुक्त कराकर उस पर अपना अधिपत्य जमाना चाहती है। भाजपा का मानना है, जब तक बी.एम.सी. को उद्धव ठाकरे के कब्जे से मुक्त नहीं करा लेती, तब तक मुम्बई पर उसकी पकड़ कमजोर ही रहेगी।**

सूत्रों ने बताया कि, नए मुख्यमंत्री शिंदे ने आज उद्धव ठाकरे के चचेरे भाई एवं महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (एम.एन.एस.) प्रमुख राज ठाकरे से सम्पर्क कर उनसे पूछा कि क्या वे अपनी पार्टी को सरकार में शामिल करना चाहेंगे। शिंदे ने उनके विधायक को कैबिनेट मंत्री का पद भी ऑफर किया। शिंदे जनमानस में यह बात डालना चाहते हैं कि एक ठाकरे उनके साथ हैं।

दूसरी तरफ उद्धव ठाकरे ने कहा कि, मुख्यमंत्री शिंदे शिवसेना मुख्यमंत्री नहीं हैं, क्योंकि शिवसेना नहीं है तो शिवसेना का सी.एम. नहीं हो सकता। शिवसेना प्रमुख एवं पूर्व मुख्यमंत्री ठाकरे, सरकार के गठन के तरीके पर टिप्पणी कर रहे थे।

ठाकरे ने कहा, "जिस तरीके से सरकार का गठन किया गया है और एक कथित शिवसेना कार्यकर्ता (एकनाथ शिंदे) को मुख्यमंत्री बनाया गया है, मैंने यही बात अमित शाह को कही थी। वर्ष 2019 में विधानसभा चुनावों के बाद सम्मानजनक तरीके से ऐसा किया जा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

छोटी पार्टियों को उनकी विधायक संख्या के अनुपात से ज्यादा महत्व क्यों मिलता है?

महाराष्ट्र में शिन्दे का मु.मंत्री बनना भी इस चलन का नवीनतम उदाहरण है

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो

नई दिल्ली, 1 जुलाई। महाराष्ट्र ने एक ऐसे राजनीतिक ट्रैण्ड को दर्शाया है जो यदा-कदा सामने आता रहा है। छोटी पार्टियों को एक गठबंधन सरकार में उनकी विधायक संख्या के अनुपात से ज्यादा सत्ता प्राप्त होना।

एकनाथ शिंदे जहां मुख्यमंत्री बन चुके हैं, वहीं गठबंधन सरकार के दीर्घकालीन स्थायित्व और शिवसेना के शिंदे धड़े के भविष्य को लेकर भी प्रश्न चिन्ह हैं। पुराने ट्रैण्ड्स दर्शाते हैं कि, भाजपा ने अपने गठबंधन सहयोगियों की कीमत पर ही अन्ततः बढ़त हासिल की है। भारतीय राजनीति में पिछले कुछ दशकों से, "कम महत्वपूर्ण" द्वारा "अति महत्वपूर्ण" को नियंत्रित करने की प्रवृत्ति एक वास्तविक पुनरावृत्ति बनती आयी है, लेकिन इनमें से अधिकांश प्रयोग विफल रहे हैं।

वर्ष 1995 में मायावती भाजपा और जनता दल के बाहरी सहयोग से मुख्यमंत्री बनी थीं। तब भाजपा की 177 सीटें थीं और बसपा की 67 सीटें थीं। भाजपा के समर्थन वापस लेने के कारण यह सरकार चार माह बाद गिर गई थी। वर्ष 1997 में मायावती भाजपा के समर्थन से एक बार फिर मुख्यमंत्री बनीं। तब भाजपा की 174 और बसपा की 67 सीटें थी। हालांकि बसपा चाहती थी-भाजपा उसे बाहर से समर्थन दे, लेकिन भाजपा सरकार शामिल हो गई। इस बार सरकार थोड़ा लम्बा चली, किन्तु कार्यकाल पूर्ण करने में विफल रही। वर्ष 2015 के विधानसभा चुनाव में बतौर महागठबन्धन राष्ट्रीय जनता दल (आर.जे.डी.) की 80 सीटें थीं और जनता दल, युनाइटेड की 71 सीटें थीं। लेकिन नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बन गए। यह सरकार अपना आधा कार्यकाल ही पूरा कर सकी। वर्ष 2004 के कर्नाटक विधानसभा चुनाव में 224 सदस्यीय विधानसभा में भाजपा को 79, कांग्रेस को 65 और जे.डी. (एस.) को 58 सीटें मिली थीं। कांग्रेस और जे.डी. (एस.) में गठबन्धन हो गया और धरम सिंह मुख्यमंत्री बने। जब कुमार स्वामी ने सरकार बनाने के लिए भाजपा से हाथ मिला लिया तब धरम सिंह सरकार गिर गई।

राष्ट्रीय पार्टियों के क्षेत्रीय पार्टियों के साथ गठबन्धन ने दोनों दिशाओं में काम किया है। कभी यह राष्ट्रीय पार्टियों के पक्ष में गया है तो कभी खिलाफ। उदाहरण के तौर पर असम, महाराष्ट्र और बिहार में यह शुरूआत भाजपा ने की थी, जो कि, एक छोटी पार्टी थी। असम की क्षेत्रीय पार्टी, असम गण परिषद (ए.जी.पी.) को जहां भाजपा ने एक तरह से निगल लिया है, वहीं महाराष्ट्र

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **ऐसे कई उदाहरण हैं देश के प्रजातंत्रीय इतिहास में। जैसे 1995 में बसपा नेता मायावती मु.मंत्री बनीं, जबकि उनकी पार्टी के कुल 67 विधायक थे तथा भाजपा के 177 थे।**
- **यह सरकार भाजपा द्वारा समर्थन वापस लेने के बाद चार महीने में गिर गयी।**
- **इसके बाद 1997 में भाजपा के 174 विधायक जीत कर आये व बसपा के 67, पर, इस बार भाजपा मायावती की सरकार में शामिल हुई, सरकार ज्यादा चली, पर अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पायी।**
- **इसी प्रकार 2015 में बिहार में नीतीश के 71 विधायक आये और आर.जे.डी. के 80, पर नीतीश मु.मंत्री बने। पर गठबंधन सरकार कार्यकाल पूरा नहीं कर पायी, पहले ही गिर गयी।**
- **कुछ ऐसा ही हुआ कर्नाटक में, 2004 के विधानसभा चुनाव के बाद।**
- **छोटी पार्टियां मु.मंत्री बनवा लेती हैं, पर सरकार समय से पूर्व गिर जाती है।**

इसाईयों के खिलाफ हिंसा

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 1 जुलाई। यूनाइटेड क्रिश्चियन फोरम (यू.सी.एफ.) ने शुक्रवार को कहा कि, वर्ष 2022 के पाँच महीनों में ईसाईयों पर हिंसा के 207 केस दर्ज हुये हैं तथा यह आँकड़ा दर्शा रहा है कि, वर्ष में प्रतिदिन हिंसा की एक से अधिक घटना हुई है।

फैडरेशन ऑफ कैथलिक असोसिएशन ऑफ आर्चडायोसिस के अध्यक्ष ए.सी. माइकेल ने एक बयान में

- **युनाइटेड क्रिश्चियन फोरम ने कहा कि, गत पांच महीने से हर दिन इसाईयों के खिलाफ एक न एक हिंसा की वारदात होती है।**

कहा कि, 2021 के अंत तक साल-दर-साल के आँकड़े देखे गये तथा सामने आया कि पूरे देश में हिंसा के 505 केस दर्ज हुए हैं। हर पाँच में से एक केस उत्तर प्रदेश में दर्ज हुआ है।

उन्होंने कहा कि, इन घटनाओं में यौन हिंसा, डराना-धमकाना, सामाजिक बहिष्कार, बर्बरता एवं कला-विध्वंस तथा धार्मिक स्थलों का अपवित्रीकरण तथा प्रार्थना-सेवा में अवरोध पैदा करना आदि से जुड़ी घटनाएं शामिल हैं। अधिकांश घटनाओं

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'नूपुर शर्मा उदयपुर के हत्याकाण्ड के लिये जिम्मेवार हैं'

सुप्रीम कोर्ट ने नूपुर शर्मा के बारे में बहुत तीखी टिप्पणियां कीं, सुनवाई के दौरान

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 1 जुलाई। सर्वोच्च न्यायालय ने शुक्रवार को भाजपा की निलम्बित प्रवक्ता नूपुर शर्मा से कहा कि, एक टी.वी. शो में मोहम्मद साहब पर की गई टिप्पणी के लिये वो राष्ट्र से क्षमा याचना करें। न्यायालय ने उन्हें इस सप्ताह के शुरु में हुई हत्या के लिये भी ज़िम्मेदार ठहराया।

न्यायमूर्ति सूर्यकांत एवं जमशेद बी. पर्दीवाला की अवकाशकालीन बैंच ने उन्हें "पूरे देश में भावनाओं को भड़काने के लिये अकेला ज़िम्मेदार ठहराया" तथा उनके द्वारा मांगी गई यह राहत देने से इनकार कर दिया कि, उनके (नूपुर के) खिलाफ विभिन्न राज्यों में दायर की गई सभी एफ.आई.आर. एक साथ मिला ली जायें। बैंच की अध्यक्षता कर रहे न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने नूपुर शर्मा की ओर से प्रस्तुत हुये वरिष्ठ वकील मनिन्दर सिंह से कहा, "नहीं मिस्टर सिंह, अदालत का अन्तःकरण संतुष्ट नहीं है। हमें कानून को तदनुरुप ढाल लेना ही चाहिये।"

सिंह ने कहा कि, नूपुर ने लिखित माफीनामा दिया है, लेकिन न्यायमूर्ति कांत ने कहा कि, "उन्होंने अपने शब्द वापस लेने में काफी देर कर दी" तथा यह भी कहा कि, नूपुर शर्मा ने यह कहकर कि, "अगर किसी की भावनाएं आहत हुई हों तो," खेद भी सशर्त व्यक्त किया है।

जब वकील ने यह कहा कि, अगर उन्हें एक अदालत से दूसरी अदालत जाते रहना पड़ेगा तो उनके जीवन के लिये खतरा पैदा हो सकता है, तो न्यायमूर्ति कांत, जो अधिकांशतः बैंच की तरफ से ही बोले, ने पलटवार किया: "खतरा उनके लिये है या सुरक्षा के लिये वो खतरा बन गई हैं? जिस तरह से उन्होंने पूरे देश की भावनाएं भड़काई हैं.....।"

अदालत ने दिल्ली पुलिस की प्रतिक्रिया की कड़ी आलोचना की तथा पूछा, "दिल्ली पुलिस ने क्या किया है? हमारा मुँह मत खुलवाइये।" न्यायमूर्ति कांत ने नूपुर शर्मा के वरिष्ठ वकील की इस दलील को खारिज कर दिया कि, एक समाचार चैनल पर उनके द्वारा टिप्पणी किये जाने के बाद सबसे पहले दिल्ली पुलिस ने ही एफ.आई.आर. दर्ज की थी। न्यायमूर्ति कांत ने कहा कि, नूपुर शर्मा को न तो गिरफ्तार किया गया था और न उनसे पूछताछ की गई थी।

न्यायमूर्ति कांत ने कहा, "टी.वी. बहस किस विषय से संबंधित थी? केवल एक एजेंडा को प्रचारित-प्रसारित करने के लिये? उन्होंने निर्णयाधीन विषय को चुना ही क्यों था? तो क्या हुआ कि, वो सत्तारूढ़ दल की प्रवक्ता हैं? क्या वे यह सोचती हैं कि उनके पीछे सत्ता खड़ी है तथा वे देश के कानून के सम्मान का ध्यान रखे बिना कोई भी बयान दे सकती हैं?"

- **नूपुर शर्मा के वकील ने कहा, नूपुर शर्मा ने माफी मांगी है तथा खेद व्यक्त किया है, पर सुप्रीम कोर्ट इस स्पष्टीकरण से संतुष्ट नहीं दिखा और कहा, "माफी मांगने में बहुत देरी की तथा खेद भी सशर्त व्यक्त किया।"**

न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने कहा, "हमने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

शर्म

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो

नई दिल्ली, 1 जुलाई। कांग्रेस ने शुक्रवार को कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने भाजपा की पूर्व प्रवक्ता नुपूर शर्मा के लिए यह न्यायोचित ही कहा है कि, पूरे देश में भावनाएं भड़काने के लिए एकमात्र वही जिम्मेवार हैं।

कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता जयराम रमेश ने एक वक्तव्य में कहा कि, शीर्ष अदालत की टिप्पणी पूरे देश की भावनाओं को दर्शाती है और इससे

- **कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता जयराम रमेश ने कहा, नूपुर शर्मा के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट द्वारा की गई टिप्पणियों के कारण भाजपा को अपना सर शर्म से झुका लेना चाहिये।**

सत्तारूढ़ पार्टी को अपना सिर शर्म से झुका लेना चाहिए।

वक्तव्य में कहा गया, "यह कोई छिपी हुई बात नहीं है कि, भाजपा साम्प्रदायिक भावनाएं भड़काकर लाभ

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राष्ट्रपति पद के लिये विपक्ष की एकता की कल्पना खत्म हुई

महाराष्ट्र में सत्ता पलटने के घटनाक्रम के बाद, द्रौपदी मुर्मू के वोट इतने अधिक हो गये कि, चुनाव महत्वहीन सा हो गया

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 1 जुलाई। अब यह बिल्कुल स्पष्ट है कि द्रौपदी मुर्मू बड़े आराम से राष्ट्रपति चुनाव जीत जायेंगी। आज यह बात स्वयं बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सार्वजनिक रूप से स्वीकार की।

महाराष्ट्र के राजनैतिक परिदृश्य में एकाएक आये इस मोड़ के बाद, भाजपा के पक्ष में आऐ महाराष्ट्र के विधायक और सांसद मुर्मू की जीत में एक अतिरिक्त संख्या बल के रूप में होंगे।

जो भी है, वाजपेयी सरकार में केन्द्रीय मंत्री रहे यशवन्त सिन्हा, जो बाद में भाजपा के कटु आलोचक हो गये थे, को अपनी इज्जत का खयाल करते हुये, राष्ट्रपति पद की दौड़ से हट जाना चाहिये। इस समय, अगर वे बहुत बड़े अन्तर से चुनाव हारेंगे तो उनकी वरिष्ठता को देखते हुये, उनकी स्थिति बड़ी दयनीय दिखाई देगी।

अगर यह स्थिति किसी को बिल्कुल साफ दिखाई दी है, तो वो हैं ममता बनर्जी, जिन्होंने आज खुलकर कह दिया कि, मुर्मू के जीतने की बेहतर संभावनाएं हैं। ममता की इस घोषणा पर अधीर चौधरी, जो बंगाल कांग्रेस के अध्यक्ष रह चुके हैं, ने ऐतराज जताते हुए कहा कि, "दीदी" ने यह घोषणा प्रधानमंत्री मोदी के निर्देशों की अनुपालना में की है।

ममता बनर्जी के इस बयान के साथ ही, राष्ट्रपति चुनाव में विपक्ष की एकजुट लड़ाई निस्संदेह रूपसे समाप्त मानी जा सकती है। सर्वसम्मति निरर्थक हो गई है। ममता बनर्जी कुछ समय से बड़ा दिलचस्प खेल खेल रही हैं। विपक्ष के बहुत से नेताओं को यह पक्का संदेह था कि ममता बनर्जी, वस्तुतः भाजपा के हित में काम कर रही हैं तथा विपक्षी एकता को बिगाड़ रही हैं।

अधीर रंजन चौधरी ने आगे कहा, "मुर्मू के पक्ष में यह बात शुरू से ही है। इस समय यह कोई नई खोज नहीं है। उन्होंने (ममता) यह बयान प्रधानमंत्री के इशारे पर दिया है।

बंगाल कांग्रेस के इस दिग्गज नेता ने कहा कि, सभी विपक्षी दलों ने अपने सर्वसम्मत उम्मीदवार का चयन किया है तथा ममता भी उस सर्वसम्मति का हिस्सा थीं। लेकिन, इस समय यह कहना कि वे राष्ट्रपति पद के लिए होने वाले मतदान को लेकर दुखी थीं, एक प्रकार का विश्वासघात है।

अंदरूनी तौर पर विपक्षी दलों की एकता के प्रयासों को ध्वस्त करने, जैसा कि अधीर चौधरी ने आरोप लगाया है, के अलावा भी, ममता की मजबूरी सुस्पष्ट है। बंगाल में आदिवासी आबादी काफी है तथा जब से वे मैदान में आई हैं, ममता आदिवासी आबादी को अपनी ओर खींचने में लगी हुई हैं।

ममता को सार्वजनिक तौर पर, भाजपा की इस पसंद को गले उतारने में तकलीफ हो ही रही थी। भाजपा के इस चयन पर सभी चकित थे तथा इससे सभी एक प्रकार से निहत्थे हो गये थे। अब भाजपा दलितों और आदिवासियों की आवाज को अपनी आवाज बनाने का दावा कर सकती है।

ममता ने आरोप लगाया कि, भाजपा ने अपने उम्मीदवार के बारे में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **इस तथ्य पर ऑफिशियल मोहर लगा दी, बंगाल की मु.मंत्री ममता बनर्जी ने, यह कह कर कि, दौपद्री मुर्मू की जीत में अब कुछ संशय नहीं, बल्कि बहुत आसान जीत होगी।**
- **ममता बनर्जी के वक्तव्य से काफी हड़कम्प मच गया है विपक्ष में, क्योंकि यशवन्त सिन्हा का चयन पूरे विपक्ष ने साथ बैठकर किया था तथा इस प्रयास में ममता बनर्जी सबसे आगे थीं, अतः उनका दौपद्री मुर्मू के पक्ष में दिया गया वक्तव्य एक तरह से पीठ में छुरा घुसाना माना जा रहा है।**
- **कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी ने तो यह तक कहा कि, ममता जी का वक्तव्य प्र.मंत्री मोदी के इशारे पर दिया गया है तथा राष्ट्रपति चुनाव के मुद्दे पर ममता बनर्जी, विपक्ष की एकता के खिलाफ काम कर रही हैं।**

हत्यारे हाई सिक्युरिटी जेल में

अजमेर, 1 जुलाई (कासं)। उदयपुर में दर्जी कन्हैयालाल की निर्मम हत्या के आरोपी रियाज और गौस मोहम्मद को अजमेर की हाई सिक्योरिटी जेल में लाया गया है। कड़ी सुरक्षा बंदोबस्त के बीच उन्हें उदयपुर से

- **कन्हैयालाल हत्याकाण्ड के आरोपी, रियाज़ व गौस मोहम्मद को कड़ी सुरक्षा के बीच उदयपुर से अजमेर पहुंचाया गया तथा हाई सिक्युरिटी जेल में तीन स्तरीय सुरक्षा घेरे में रखा गया है।**

अजमेर पहुंचाया गया। अजमेर जेल के अधीक्षक पारस जांगिड़ के अनुसार कन्हैयालाल की हत्या के आरोपियों को न्यायिक अभिरक्षा में भेजे जाने के बाद गुरुवार आधी रात बाद करीब 2.30 बजे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)